# पैग़म्बरे वफा हज़रते अब्बास (अ0) और इबादते ख़ुदा

मौलाना अली हसनैन नजफी साहब

मेरी मुराद पैग़म्बरे वफा और इबादते खुदा से ऐसी अज़ीमुल मरतबत शख़सियत से है जिसने अपने पुरखुलूस अमल और आला किरदार से यह साबित कर दिया है कि खुदा मौजूद है और वह एक है अकेला है उसका कोई शरीक नहीं है और वही लायक़े इबादत है। उसी एक खुदा की इबादत व बन्दगी करनी चाहिए, उसी अज़ीमुल मरतबत का नाम अब्बास है और उसकी कुन्नियत अबुलफ़ज़ल है और वह बाबुलमुराद है। इसी शख़सियत को क़मरे बनी हाशिम भी कहा जाता है।

बनी हाशिम का यह चाँद माँ की आग़ोश में चमका, बहन और भाई की आग़ोश में चमका, और एक बार जब अपने शफ़ीक़ बाप के ज़ानों की ज़ीनत बना तो अली (अ0) जैसे इबादतगुज़ार, अली (अ0) जैसे खुदा परस्त ने इरशाद फरमाया अब्बास कहो एक, अब्बास ने कहा एक, तब अली मुरतज़ा ने कहा अब्बास कहो दो, तो जनाब अबुलफ़ज़ल ने अर्ज़ किया बाबा मैंने जिस ज़बान से एक कहा है उस ज़बान से दो कैसे कह सकता हूँ। बेहतरीन बाप का बेहतरीन बेटा था। हक़ीक़त में अपने मान रखने वालों को यह दर्स देता था कि अगर अली (अ0) की आग़ोश में कोई बच्चा आता है तो बाप की ज़ीनत होता है। बाप के लिए ऐब नहीं होता इसी तरह मौला अली (अ0) उम्मत के बाप हैं। उम्मत से फरमा रहे हैं मेरे लिए ज़ीनत बनो, मेरे लिए ऐब न बनो। अब्बास अपने बाप अली मुर्तज़ा के लिए कमाले मारफत व कमाले इबादत की वजह से आग़ोश की ज़ीनत थे और बता रहे थे कि मैं अपने बाप से इस क़द्र क़रीब अपनी ज़ाती सलाहियत और खुदा शनासी की वजह से हूँ। अब अगर कोई मौला अली (अ0) से क़रीब होना चाहता है तो वह खुदा परस्ती और खुदा शनासी की सलाहियत भी पैदा करे।

वाकेआ–ए–कर्बला में अब्बास ने किसी मौक़े पर भी अपने माबूद को नहीं भुलाया। ख़याल तो कीजिये कि इमाम हुसैन (अ0) पर उनकी आल पर, उनके अस्हाब पर, उनके बच्चों पर पानी बंद कर दिया गया। क़मरे बनी हाशिम खुद भी प्यासे हैं और अब्बास बच्चों की तिलमिलाहट को बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं। अब्बास को ज़ाते वहदहू ला शरीक पर भरोसा है इसलिए वह पानी हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं। वह जानते हैं कि खुदा ने इस्माईल (अ0) की शिद्दते प्यास पर रहम खाया था और उनके क़दम की रगड़ से बतहा की ज़मीन पर एक चश्मा जारी कर दिया था। अबुलफ़ज़ल को मालूम था कि खुदावन्दे आलम ने जनाब अब्दुल मुत्तलिब को ख़्वाब दिखाया था कि मक्का में फलाँ जगह पर पानी मौजूद है और ख़्वाब की बिना पर अब्दुल मुत्तलिब ने जब उस जगह को तलाश करके पानी हासिल करने की कोशिश की थी तो उन्हें कुआँ मिला इसलिए कर्बला में हज़रत अब्बास ने कुएँ खोदे मगर मसलहते खुदावन्दी इसी में थी कि उन कुओं से पानी न निकले लेकिन अब्बास ने कुआँ दीन की नुसरत और मदद में खोदा था। उन्हें अल्लाह के

इबादतगुज़ार बन्दों की जान बचाने की फ़िक्र थी। इसलिए जनाब अबुलफ़ज़ल ने इमाम आली मक़ाम के कई एक जाँनिसारों को अपने साथ लिया और फ़ुरात का इरादा किया और सख़्त जंग के बाद बीस मशकें पानी ले आये और इस तरह खुदावन्दे आलम की बारगाह में उसकी बड़ाई और अज़मत का इक़रार किया। मगर शदीद गर्मी में वह पानी किस वक़्त तक चलता और फिर वह तारीखें आ गयीं कि पानी ख़त्म हो गया। दरया पर सख़्त पहरा हो गया और खुदा परस्तों के इम्तिहान का वक़्त आ गया।

जिस तरह इमाम हुसैन (अ0) के अस्हाब व अन्सार प्यासे रहकर खुदा को याद कर रहे थे। जिस तरह हुसैन (अ0) की बहन प्यास की शिद्दत में खुदा की इबादत कर रही थीं। जिस तरह प्यास की शिद्दत में हुसैन (अ0) के बच्चे अल्लाह को याद कर रहे थे अब्बास भी अपने माबूद को याद कर रहे थे। दो तीन रोज़ तक प्यास का इम्तिहान देते रहे। अब्बास को शिम्र ढूँढता हुआ आया और क़मरे बनी हाशिम से कहने लगा अब्बास! हुसैन का साथ छोड़ दो मैं तुम्हारे लिए अमान नामा लाया हूँ। अब्बास ने शिम्र की दरख़्वास्त को ठुकराते हुए कहा : खुदा की अमान इब्ने सुमैय्या की अमान से बेहतर है और इस तरह क़मरे बनी हाशिम अब्बास (अ0) ने एक बार फिर अपनी खुदापरस्ती का सबूत दिया और बता दिया कि खुदा की बन्दगी हमारी रग–रग में समाई हुई है। मैं उसका बन्दा तन्हा ज़बान से नहीं बल्कि मेरा दिल, मेरी ज़बान, मेरा खून सब खुदा की बन्दगी का एतराफ कर रहे हैं।

अब्बास (अ0) ने इमाम हुसैन (अ0) के साथ शबे आशूर इबादत की। अबुलफ़ज़ल ने इमाम हुसैन (अ0) की इक़्तेदा में सुब्हे आशूर नमाज़ पढ़ी.............जब ग़ाज़ी का शाना क़लम हुआ तो अब्बास ग़ाज़ी ने दुश्मनों से ख़िताब करते हुए कहा तुम ने मेरे दाहिने बाज़ू को काट दिया है। याद रखो तुम मेरे शाने को तो क़लम कर सकते हो लेकिन मुझे दीन की हिमायत और मदद से जुदा नहीं कर सकते हो मैं हमेशा दीन की मदद करता रहूँगा। अब्बास के सामने खुदा था, अब्बास के दिल में खुदा था, अब्बास से खुदा रगे गर्दन से भी ज़ियादा क़रीब था। जब क़मरे बनी हाशिम का दायाँ शाना दुश्मनाने इस्लाम ने काट दिया तो फरमाया ऐ नफ्स तू कुफ्फार से ख़ौफ न खा तुझको खुदावन्दे आलम की रहमत व मग़फिरत की बशारत हो। ऐ नफ्स तू अपने नबी के साथ वह नबी जो ताहिरीन और पाकीज़ा जानों के सरदार हैं। ऐ रब तू इन गुनाहगार और नाफरमान और ज़ालिमों को जहन्नम में दाख़िल कर।

आप फरमाते थे कि मैं उन कटे हुए शानों से तमाम नबियों के सरदार रसूले अकरम (स0) से और अपने बुजुर्ग बाप अली मुर्तज़ा (अ0) से मुलाक़ात करूँगा। हमारे चौथे इमाम ज़ैनुल आबिदीन (अ0) क़मरे बनी हाशिम की अज़मत व बुजुर्गी और उनकी खुदापरस्ती और खुदाशनासी की तारीफ करते हुए इरशाद फरमाते है : खुदा वन्देआलम मेरे चचा अब्बास (अ0) पर अपनी रहमत नाज़िल करे। उन्होंने बड़ा ईसार फरमाया। अपनी जान को अपने भाई पर कुर्बान कर दिया और अपने दोनो हाथों को आँजनाब पर निसार कर दिया तो खुदावन्देआलम ने इसके बदले दो पर अता किये और अब वह हज़रत जाफरे तैय्यार की तरह जो कि आँजनाब के चचा थे फरिश्तों के साथ जन्नत में उड़ते है और रोज़े क़यामत खुदावन्देआलम की बारगाह में वह बुलन्द मक़ाम होगा जिसे देखकर तमाम शोहदा रश्क करेंगे।

क़ैसर बस्तवी कहते हैं :

***नहर पर शाने कटा कर दीन को शाने दिये***
***दूध था तेरा जो ग़ाज़ी ने पिया उम्मुल बनीन***

□□□